□□ □□□ □□□□ □□□, “□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□?”

□□□□□ □□ — □□□!

□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□-□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□!

□ 1 □□□□□□□□□□□ 4:9

“□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□ □□ — □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ — □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□!”

□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ — □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□

□□□□□□□ □□□□□ □□?

□□□□□□□ □□ □□□□ □□ — □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□
□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□, □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ — □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□

□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ — □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□□: □□ □□□□□□ □□□□□□

□□□□□□ □□□□□□ □□□, □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□, □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□, □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□
□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□, □□ □□□□ □□□ □□ — □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□

□ □□□□□□□□ 10:11
“□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□”

□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ entertainers □□ □□□□□ □□□□
□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ — □□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□

□□ □□ □□ “□□□□□□□□” □□ □□□□ □□□□!

□□□! □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ —
□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□
□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□

□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□?
□□□□ □□ □□□□□ □□ “□□□□□□” □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□?

□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□:
“□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □ □□□□□□ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□!”
□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□

हम शैतान को कैसे बहकाएँ?

पुराने साँप-बहकाने वाले बाँसुरी बजाते थे, और एक पल का ध्यान भी नहीं खोते थे।
वो जानते थे कि अगर ध्यान भटका, तो साँप उन्हें काट सकता है।

साँप को काटने के लिए मानसिक एकाग्रता चाहिए।
और बाँसुरी की ध्वनि उसे भ्रमित करती थी, जिससे वह निशाना नहीं साध पाता था।

ठीक उसी तरह, जब हम मसीही जीवन में आत्मिक बाँसुरी बजाते हैं, तो:

शैतान भ्रमित होता है,
वह हमें नुकसान नहीं पहुँचा पाता,
और स्वर्ग आनंदित होता है!

तो हमारी आत्मिक बाँसुरी कौन-सी है?

चार मुख्य आत्मिक बाँसुरियाँ:

1. पवित्रता (Holiness)
2. गवाही देना (Witnessing/Testifying)
3. प्रार्थना (Prayer)
4. परमेश्वर का वचन पढ़ना (Reading the Word)

अगर हम इन चारों को निरंतर बजाते रहें,
तो शैतान हमारे सामने एक मूर्ख और शक्तिहीन बनकर खड़ा रहेगा — और हम विजयी होकर इस जीवन की दौड़ पूरी करेंगे!

एक चेतावनी और एक प्रतिज्ञा

यदि हम इन आत्मिक बाँसुरियों को कमज़ोर कर दें —
पवित्रता को छोड़ें, प्रार्थना कम करें, वचन न पढ़ें, या गवाही देना बंद कर दें —
तो हम शैतान को दोबारा ध्यान केंद्रित करने का मौका देते हैं, और वह हमें गिरा सकता है।

और जब हम गिरते हैं — तो फिर कोई इनाम नहीं, कोई ताज नहीं।

अंत में…

भाइयों और बहनों,
आइए हम मनोरंजन करना कम न करें, बल्कि उसे सही दिशा दें! मनोरंजन करें — लेकिन पवित्र जीवन से, ताकि स्वर्ग आनंदित हो और शैतान पराजित!

Maranatha!

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

(□□□□□ □ □□□ □□!)

□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp